20

अष्टाध्यायी का पंचम और षष्ठ अध्याय

इस पाँचवे पाठ में अष्टाध्यायी के पाँचवे और छठे अध्याय के कुछ सूत्रों की व्याख्या करेंगे। पूर्व पाठ में आपने वैदिक व्याकरण में घ-तातिल्-वति इत्यादि प्रत्ययों के प्रयोग को जाना है। प्रस्तुत पाठ में कुछ डट्, मट् इत्यादि आगमनों का विवरण देखेंगे। उनके बारे में जानेंगे। छन्द में बहुव्रीहि विषय में नूतन नियमो को सूत्रव्याख्या सहित प्रतिपादित करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे–

- बहुव्रीहिसम्बन्धि नियमों को जान पाने में;
- खिद्-धातु से विकल्प से एच को आकार विधान करेने के बारे में जान पाने में;
- दीर्घाज्जसि इचि च पूर्वसवर्णदीर्घ के विकल्प को जान पाने में;
- छन्द में दन्त शब्द को बहुव्रीह में दत्-आदेश विधान के बारे में जान पाने में;
- स्य यहाँ पर कब सकार का लोप होता है उस विषय को जान पाने में।

20.1 थट् च छन्दसि॥ (5.2.50)

सूत्रार्थ- संख्यादि में न हो ऐसे नांत संख्यावाची प्रातिपदिक के परे डट थट् और मट् हो।

सूत्रावतरण- छन्द में संख्यावाची प्रातिपदिक से डट थट्-मट् इनको आगम करने के

लिए इस सूत्र की रचना की गई है।

सूत्रव्याख्या– इस विधिसूत्र में तीन पद है। थट् यह प्रथमान्त पद है। च यह अव्ययपद है। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है। तस्य पूरणे डट् इस सूत्र से डट् इस पद की अनुवृति है। और वह षष्ठी के विपरिणाम में है। नान्तादसंख्यादेर्मट् इस सम्पूर्ण सूत्र की यहाँ अनुवृति है। संख्याया: गुणस्य निमाने मयट् इस सूत्र से संख्याया: इस पद की यहाँ अनुवृति है। और उससे इस सूत्र का अर्थ होता है असंख्यादि नान्त संख्यावाचक प्रातिपदिक से परे डट: थट्-मट् आगम होता है।

उदाहरण– पञ्चमम् पञ्चथम् चेत्यादीन्युदाहरणानि।

सूत्रार्थसमन्वय– लोक में संख्यावाचि प्रातिपदिक से विहित डट के स्थान में नान्तादसंख्यादेर्मट् इससे मट्-आगम का विधान होता है। छन्द में तो प्रकृतसूत्र से तो थट्-आगम और मट् आगम का विधान है। और भी पञ्चन् शब्द से डट्प्रत्यय करने पर पञ्चन् अ इस दशा में प्रकृतसूत्र से डट को थट्-आगम करने पर थट्- प्रत्ययान्त्य टकार की हलन्त्यम् इस सूत्र से इत्संज्ञा होने पर और तस्य लोप इस सूत्र से उस लोप के होने पर पञ्चन् थ् अ इस स्थिति में न लोप: प्रातिपदिकान्तस्य इस सूत्र से पञ्चन् शब्द के अन्त्य नकार का लोप होने पर पञ्च थ् अ इस स्थिति में संयोग से निष्पन्न पञ्चथ इस शब्दस्वरूप के तद्धितान्त होने से कृत्तद्धितसमासाश्च इससे उसकी प्रातिपदिकसंज्ञा होने पर और ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्यय:, परश्च इनके अधिकार में वर्तमान से स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्ययोस्सुप् इस सूत्र से खले कपोतन्याय से इक्कीस स्वादिप्रत्ययो प्राप्त होने पर प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सु प्रत्यय करने पर पञ्चथ सु इस स्थिति में पञ्चथ शब्द की क्लीबलिङ्ग में वर्तमान होने से अतोऽम् इस सूत्र से सुप्रत्यय के स्थान में अम आदेश होने पर पञ्चथ अम् इस स्थिति में अम् इस्की विभक्तिश्च इससे विभक्तिसंज्ञक होने से न विभक्तौ तुस्मा: इस निषेधसूत्र से हलन्त्यम् इस सूत्र से उस मकार की इत्संज्ञा का निषेध करने पर पञ्चथ अम् इस स्थिति में अमि पूर्व: इससे पूर्वरूप एकादेशे होने पर अकार और सभी वर्णो का मिलान करने पर पञ्चथम् यह रूपसिद्ध होता है।

और इसी प्रकार पञ्चन् अ इस दशा में प्रकृतसूत्र से मट्-आगम करने पर मट्-प्रत्ययान्त्य के टकार की हलन्त्यम् इस सूत्र से इत्संज्ञा होने पर तस्य लोप: इस सूत्र से उसके लोप होने पर पञ्चन् म् अ इस स्थिति में न लोप: प्रातिपदिकान्तस्य इस सूत्र से पञ्चन-शब्द के अन्त्य नकार का लोप होने पर पञ्च म् अ इस स्थिति में संयोग करने पर निष्पन्न पञ्चम शब्दस्वरूप के तद्धितान्त होने से कृत्तद्धितसमासाश्च इससे उसकी प्रातिपदिक संज्ञा होने पर और उसके बाद ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्यय:, परश्च इनके अधिकार में वर्तमान से स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् इस सूत्र से खले कपोतन्याय से इक्कीस स्वादिप्रत्ययो के प्राप्त होने पर प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सुप्रत्यय करने पर पञ्चम सु इस स्थिति में पञ्चथ-शब्द का क्लीबलिङ्ग में वर्तमान

टिप्पणी

होने से अतोऽम् इस सूत्र से सु प्रत्यय के स्थान में अम आदेश होने पर पञ्चम अम् इस स्थिति में अम् इसकी विभक्तिश्च इससे विभक्ति संज्ञा होने से न विभक्तौ तुस्माः इस निषेधसूत्र से हलन्त्यम् इस सूत्र से मकार की इत्संज्ञा का निषेध करने पर पञ्चम अम् इस स्थिति में अमि पूर्वः इससे पूर्वरूप एकादेश अकार करने पर और सभी वर्णों का मिलान करने पर पञ्चमम् यह रूप सिद्ध होता है।

20.2 बहुलं छन्दसि॥ (5.2.122)

सूत्रार्थ- मत्वर्थ में विनि हो।

सूत्रावतरण- अस्-माया-मेधा-स्रजो विनिः इस सूत्र से पढ़े हुए प्रातिपदिक से भिन्न प्रातिपदिक की विनिप्रत्यय विधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की गई है।

सूत्राव्याख्या- यह दो पद वाला विधिसूत्र है। बहुलम यह प्रथमान्त पद है। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है। अस्-माया-मेधा-स्रजो विनिः इस सूत्र से विनिः इस प्रथमान्त पद की अनुवृति आती है। तदस्यास्त्यस्मिन्निति इस सूत्र की यहाँ अनुवृति है। प्रातिपदिकात् प्रत्ययः परः इनका यहाँ अधिकार है। और उससे सूत्र का अर्थ होता है छन्द में तदस्यास्त्यस्मिन्निति अर्थ में प्रातिपदिक से बहुल करके विनि प्रत्यय हो।

विशेष- अस्-माया-मेधा-स्रजो विनिः इस सूत्र से कहा गया अस्-आदि शब्दों से ही विनिप्रत्यय का विधान किया। उससे अ अतिरिक्त प्रातिपदिक से विधान नहीं किया। परन्तु इस सूत्र से उससे अतिरिक्त प्रातिपदिक से बहुल करके विनिप्रत्यय का विधान किया। बहुल किसको कहते है-

क्वचित्प्रवृत्तिः क्वचिदप्रवृत्तिः क्वचिद्विभाषा क्वचिदन्यदेव।
विधेर्विधानं बहुधा समीक्ष्य चतुर्विधं बाहुलकं वदन्ति।इति॥

कारिकार्थ– सूत्र के द्वारा कहे गये कार्य की कही पर प्राप्ति नहीं होती है, फिर भी वहा पर प्रवृत्ति हो। कहीं पर प्राप्ति है लेकिन प्रवृत्ति नहीं होती है। और भी कहीं पर विकल्प से प्रवृत्ति होती है। और कहीं पर अन्य ही होता है।

उदाहरण- तेजस्वी इत्युदाहरणम्।

सूत्र अर्थ का समन्वय- तेजस्-शब्दात् अस्-माया-मेध-स्रजो विनिः इससे विनिप्रत्यय का विधान नहीं है। क्योंकि यह शब्द सूत्र में पढ़ा हुआ नहीं है। परन्तु इस सूत्र से तेजस्विन्-शब्द से विनिप्रत्यय का विधान करते है। यहाँ बहुलम्-शब्द का प्रथमा अर्थ का ग्रहण है। तेजस् विनि इस स्थिति मे विनि-प्रत्यय के अन्त्य इकार के अनुनासिक होने से पाणिनीयैः प्रतिज्ञा के अनुसार उपदेशेऽजनुनासिक इत् इस सूत्र से इत्संज्ञा और तस्य लोपः इस सूत्र से उसका लोप करने पर और संयोग करने पर निष्पन्न तेजस्विन्-शब्दस्वरूप के तद्धितान्त होने से कृत्तद्धितसमासाश्च इससे उसकी प्रातिपदिकसंज्ञा होने पर और ङ्याप्प्रातिपदिकात्,

टिप्पणी

प्रत्ययः, परश्च इनके अधिकार में वर्तमान स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्य स्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् इस सूत्र से खले कपोतन्याय से इक्कीस स्वादिप्रत्यय प्राप्त होने पर प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सुप्रत्यय करने पर और सुप्रत्यय के उकार की उपदेशेऽजनुनासिक इस सूत्रे से इत्संज्ञा और उसका तस्य लोपः इस सूत्र से लोप होने पर तेजस्विन् स् इस स्थिति में सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ इस सूत्र से इकार को दीर्घ ईकार करने पर तेजस्वीन् स् इस स्थिति में हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् इस सूत्र से सकार के लोप होने पर तेजस्वीन् इस स्थिति में नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य इससे नकार का लोप होने पर तेजस्वी यह रूप बनता है।

20.3 अमु च छन्दसि॥ (5.4.12)

सूत्रार्थ- किम एकारान्त त्तिङन्त तथा अव्ययो से विहित घ आमु अद्रव्यप्रकर्ष में प्रातिपदिक से अमु प्रत्यय हो।

सूत्रावतरणम्- किम एकारान्त त्तिङ अव्यय घ आमु अद्रव्यप्रकर्ष अर्थ में प्रातिपदिक से अमुप्रत्यय विधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की गई है।

सूत्राव्याख्या- यह तीन पद वाला विधिसूत्र है। अमु यह लुप्तप्रथमान्त पद है। च यह अव्ययपद है। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है। किमेत्तिङव्ययघादाम्वद्रव्यप्रकर्षे इस सम्पूर्ण सूत्र की यहाँ अनुवृति आती है। प्रातिपदिकात् प्रत्ययः इनका अधिकार है। उससे सूत्र का अर्थ होता है छन्द में किम एकारान्त त्तिङ अव्यय घ आमू अद्रव्यप्रकर्ष अर्थ में अमु प्रत्यय हो।

उदाहरण- प्रतरम् यह उदाहरण है। वहां प्र-उपसर्ग से तरप्-प्रत्यय करने पर तरप्-प्रत्ययान्त्य के पकार की हलन्त्यम् इस सूत्र से इत्संज्ञा होने पर तस्य लोपः इससे उसका लोप होने पर और संयोग करने पर निष्पन्न प्रतरशब्द के तद्धितान्त होने से कृत्तद्धितसमासाश्च इस सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा होने पर प्रकर्ष अर्थ में छन्द में प्रकृतसूत्र से अमुप्रत्यय करने पर अनुनासिकत्वेन पाणिनीयैः प्रतिज्ञा के अनुसार अमुप्रत्यय के उकार की इत्संज्ञा होने पर और उसका तस्य लोपः इस सूत्र से उस इत्संज्ञक उकार के लोप होने पर प्रतर अम् इस स्थिति में यचि भम् इससे प्रतर इसकी भसंज्ञा होने पर और यस्येति च इस सूत्र से रेफ से उत्तर अकार के लोप होने पर और संयोग होने पर प्रतरम् यह रूप है। लोक में तो प्रतराम्।

20.4 बहुप्रजाश्छन्दसि च॥ (5.4.123)

सूत्रार्थ- छन्द में बहुव्रीह में बहुप्रजास असिच्-प्रत्ययान्त निपात किया जाता है।

सूत्र का अवतरण- वेद में बहुप्रजास यहाँ पर असिच्-प्रत्ययान्त पद के निपात के लिए

इस सूत्र की रचना की गई है।

सूत्रव्याख्या- इस विधिसूत्र में तीन पद है। बहुप्रजा: यह प्रथमान्त पद है। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है। च यह अव्ययपद है। नित्यमसिच्प्रजा-मेधयो: इस सूत्र से असिच् इसकी अनुवृति है। बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णो: स्वाङ्गात्षच् इस सूत्र से बहुव्रीहौ इस पद की अनुवृति है। प्रातिपदिकात् प्रत्यय: पर: इनका अधिकार है। निपात यह आक्षेप से प्राप्त होता है। निपातन किसको कहते है तो सिद्धिप्रक्रिया के निर्देश को ही निपात कहा जाता है। वहा सूत्र का अर्थ होता है छन्द में बहुप्रजास यह शब्द असिच्-प्रत्ययान्त बहुव्रीहि समास में निपातन किया जाता है।

उदाहरण- इस असिच्-प्रत्ययान्त निपातन का बहुप्रजा-शब्द का प्रयोग वेद में प्राप्त होता है। और इसका प्रयोग **बहुप्रजा:** निर्ऋतिमाविवेश्च यह है। लोक में तो **बहुप्रज:।**

20.5 छन्दसि च॥ (5.4.142)

सूत्रार्थ- दन्त को दतृ आदेश हो बहुव्रीहि में।

सूत्र का अवतरण- छन्द में दन्तशब्द को बहुव्रीहि समास में दतृ-आदेश विधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की गई है।

सूत्र की व्याख्या- इस विधिसूत्र में दो पद है। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है। च यह अव्ययपद है। वयसि दन्तस्य दतृ इस सूत्र से दन्तस्य और दतृ इन दो पद की अनुवृति है। बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णो: स्वाङ्गात्षच् इस सूत्र से बहुव्रीहौ इस पद की अनुवृति है। प्रातिपदिकात् प्रत्यय: पर: इनका अधिकार है। और सूत्र का अर्थ होता है छन्द में दन्त शब्द को दतृ आदेश बहुव्रीहि समास में हो।

उदाहरण- उभयतोदत:।

सूत्र अर्थ का समन्वय- उभयत: दन्ता: येषामिति विग्रह करने पर बहुव्रीहिसमास में उभयतस् दन्त इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से अनेकाल्शित्सर्वस्य इस परिभाषा परिष्कार से दन्त इसको दतृ आदेश होने पर उभयतस् दत् इस स्थिति में सकार को रुत्व और उकार करने पर उभयत उ दत् इस स्थिति में संयोग से निष्पन्न होने से उभयतोदत्-प्रातिपदिक से सु विभक्तिकार्य करने पर उभयतोदत: यह रूप सिद्ध होता है।

20.6 ऋतश्छन्दसि॥ (5.4.158)

सूत्रार्थ- ऋदन्त बहुव्रीहि से कप् प्रत्यय न हो।

सूत्रावतरणम्- छन्द में ऋदन्त प्रातिपदिक से बहुव्रीहि समास में कप्-प्रत्ययनिषेध के लिए इस सूत्र की रचना की गई है।

टिप्पणी

सूत्रव्याख्या- इस विधिसूत्र में दो पद है। ऋतः छन्दसि ये सूत्रगत पदच्छेद है। ऋतः यह पञ्चम्यन्त पद है। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है। न संज्ञायाम् इस सूत्र से न इस पद की यहाँ अनुवृति है। उरः प्रभृतिभ्यः कप् इस सूत्र से कप् इसकी अनुवृति है। बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात्षच् इस सूत्र से बहुव्रीहौ इस पद की अनुवृति है। प्रातिपदिकात् प्रत्ययः परः इनका अधिकार है। यहा ऋतः प्रातिपदकात् ये दोनों समानविभक्तिक पद है। ऋतः यह विशेषण है। प्रातिपदिकात् यह विशेष्य है। इसलिए येन विधिस्तदन्तस्य इससे तदन्तविधि में ऋदन्तात् प्रातिपदिकात् यह अर्थ प्राप्त होता है। उससे सूत्र का अर्थ होता है छन्द में ऋदन्त प्रातिपदिक से बहुव्रीहि समास में कप्-प्रत्यय नही होता है।

उदाहरण- उभयतोदतः प्रतिगृह्णाति।

सूत्रार्थसमन्वय- उभयतः दन्ताः सन्ति अस्य इस विग्रह में बहुव्रीहिसमास करने पर उत्तरपद दन्तशब्द को दतृ आदेश करने पर और प्रकिया कार्य करने पर उभयतोदतः यह रूप सिद्ध होता है।

20.7 तुजादीनां दीर्घोऽभ्यासस्य॥ (6.1.7)

सूत्रार्थ- तुजादि धातुओ के अभ्यास को दीर्घ हो।

सूत्रावतरणम्- तुज्-आदि धातुओ के अभ्यास को दीर्घ विधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की है।

सूत्रव्याख्या- इस विधिसूत्र में तीन पद है। तुजादीनाम् दीर्घः अभ्यासस्य ये सूत्रगत पदच्छेद है। तुजादीनाम् यह षष्ठ्यन्त पद है। दीर्घः यह प्रथमान्त पद है। अभ्यासस्य यह षष्ठ्यन्त पद है। अभ्यासः यह एक संज्ञा है। दो बार कहे हुए में पूर्व की पूर्वोऽभ्यासः इससे अभ्याससंज्ञा का विधान है। धातोः इस पद की यहाँ अनुवृति है। और वह षष्ठीबहुवचनान्त से विपरिणाम है। उससे सूत्र का अर्थ होता है तुजादि धातुओं के अभ्यास को दीर्घ हो।

उदाहरण- तुज्-धातु से लिट्-लकार में कानच्-प्रत्यय करने पर और अनुबन्धलोप करने पर तुज् आन इस स्थिति में द्वित्व करने पर तुज् तुज् आन इस स्थिति में पूर्वोऽभ्यासः इस सूत्र से द्विरुक्त पूर्व तुज्-इसकी अभ्याससंज्ञा होने पर हलादिः शेषः इस सूत्र से अभ्यास का आदि हल शेष रहने पर तु तुज् आन इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से अभ्यास उकार ह्रस्व को दीर्घ होने पर तू तुज् आन इस ति स्थिते संयागे निष्पन्नस्य तूतुजान इति शब्दस्वरूपस्य कृदन्तत्वात् कृत्तद्धितसमासाश्च इससे उसकी प्रातिपदिक संज्ञा होने पर और ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्ययः, परश्च इनके अधिकार में वर्तमान से स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् इस सूत्र से खले कपोतन्याय से इक्कीस स्वादिप्रत्यय प्राप्त होने पर प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सुप्रत्यय करने पर सुप्रत्यय के उकार की उपदेशेऽजनुनासिक इत् इस सूत्र से इत्संज्ञा होने पर

तस्य लोपः इस सूत्र से उसके लोप होने पर तूतुजान स् इस स्थिति में समुदाय के सुबन्त होने से सुप्तिङन्तं पदम् इससे उसकी पदसंज्ञा होने पर तदन्त सकार के स्थान में ससजुषो रुः इससे रु यह आदेश होने पर अनुबन्धलोप होने पर तूतुजान र् इस स्थिति में रेफ से परे वर्णों के अभाव में विरामोऽवसानम् इस सूत्र से अवसान संज्ञा होने पर अवसानपरक होने से समुदाय के अन्त्य रेफ के स्थान में खरवसानयोर्विसर्जनीयः इससे विसर्ग आदेश होने पर और सभी वर्णों के मिलान करने पर तूतुजानः यह रूप सिद्ध होता है।

20.8 बहुलं छन्दसि॥ (6.1.34)

सूत्रार्थ- ह्व को सम्प्रसारण हो।

सूत्र का अवतरण- छन्द में ह्व को बहुल सम्प्रसारण विधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की गई है।

सूत्रव्याख्या- यह दो पद वाला विधिसूत्र है। बहुलम यह प्रथमान्त पद है। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है। ह्वः सम्प्रसारणम् इस सम्पूर्ण सूत्र की यहाँ अनुवृति आती है। उससे सूत्र का अर्थ होता है छन्द में ह्वेञ् स्पर्धायाम् इस धातु से बहुल करके सम्प्रसारण हो।

विशेष- बहुलम् नाम क्या है तो कहते है-

> **क्वचित्प्रवृत्तिः क्वचिदप्रवृत्तिः क्वचिद्विभाषा क्वचिदन्यदेव।**
> **विधेर्विधानं बहुधा समीक्ष्य चतुर्विधं बाहुलकं वदन्ति॥ इति।**

कारिका का अर्थ पूर्व में ही कह दिया है।

उदाहरण में सूत्रार्थसमन्वय- आङ्पूर्वक ह्वेधातु से लट्-लकार में लकार के स्थान में लस्य इस सूत्र के अधिकार में वर्तमान से तिप्तस्झिसिप्थस्थमिब्वस्मस्तातांझथासाथांध्वमिड्वहिमहिङ् इस सूत्र से खले कपोतन्याय से अट्ठारह तिबादिप्रत्ययो में प्राप्त उत्तमपुरुष एकवचन की विवक्षा में इडागम और अनुबन्धलोप होने पर आ ह्वे इस स्थिति में इकार की अचोऽन्त्यादि टि इस सूत्र से टिसंज्ञा होने पर टित आत्मनेपदानां टेरे इससे टिसंज्ञक इकार के स्थान में एत्व एकार होने पर आ ह्वे ए इस स्थिति में कर्तरि शप् इस सूत्र से धातु से शप्प्रत्यय करने पर बहुलं छन्दसि (2.4.73) और इससे शप का लुक होने पर प्रकृतसूत्र से बहुल करके सम्प्रसारण होने पर वकार को उकार होने पर आ ह् उ ए ए इस स्थिति में उकार के और प्रथम-एकार के स्थान में संप्रसारणाच्च इस सूत्र से पूर्वरूप एकादेश होने पर उकार होने पर आ ह् उ ए इस स्थिति में अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ इससे उकार के स्थान में उवङादेश होने पर हलन्त्यम् इस सूत्र से उवङ्-प्रत्ययान्त्य ङकार की इत्संज्ञा होने पर तस्य लोपः इससे इत्संज्ञक ङकार

टिप्पणी

के लोप होने वर्णों के मिलाने पर आहुवे यह रूप सिद्ध होता है।

बहुलम् छन्दसि (6.1.34) इस पूर्वोक्त सूत्र से बहुल करके सम्प्रसारण का विधान करते है। उस बहुल ग्रहण से कही पर सम्प्रसारण नहीं होता है। जैसे ह्वयामि मरुतः शिवान्, ह्वयामि विश्वान् देवान् इत्यादि में सम्प्रसारण का अभाव है।

20.9 खिदेश्छन्दसि॥ (6.1.52)

सूत्रार्थ- छन्द में खिद् धातु को एच के स्थान पर आत्व होता है।

सूत्रावतरण- खिद्-धातु के एच को सविकल्प से आकार विधान करने के किए इस सूत्र की रचना की है।

सूत्राव्याख्या- यह दो पद वाला विधिसूत्र है। खिदेः छन्दसि ये सूत्र में आये पदच्छेद है। खिदेः यह षष्ठ्यन्त पद है। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है। विभाषा लीयतेः इस सूत्र से विभाषा इस पद की अनुवृति है। आदेच उपदेशेऽशिति इस सूत्र से आत् एचः इन दो पद की अनुवृति है। उससे सूत्र का अर्थ होता है छन्द में खिदे धातु के एच को विकल्प से आत्व हो।

उदाहरण- खिद्-धातु से लिट्-लकार में लकार के स्थान में तिप करने पर और तिप के स्थान पर णलादेश और अनुबन्धलोप होने पर खिद् अ इस स्थिति मर खिद् इसको द्वित्व होने पर खिद् खिद् अ इस स्थिति में द्विरुक्त पूर्वभाग की पूर्वोऽभ्यासः इससे अभ्याससंज्ञा होने पर हलादिः शेषः इससे अभ्यास का आदिहल्शेष रहने पर खि खिद् अ इस स्थिति में अभ्यासे चर्च इससे खकार के स्थान में चकार करने पर चि खिद् अ इस स्थिति में खकार से उत्तर इकार को गुण एकार करने पर चि खेद् अ इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से खेद् इसके एच एकार के स्थान में आकार करने पर सभी वर्णों के मिलान करने पर **चिखाद** यह रूप बनता है। लोक में तो **चिखिदे** यह रूप है।

20.10 शीर्षश्छन्दसि॥ (6.1.60)

सूत्रार्थ- शिरस् शब्द को शीर्षन् हो।

सूत्रावतरण- शिरस् शब्द को शीर्षन् इस निपातन विधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की।

सूत्रव्याख्या- इस विधिसूत्र में दो पद है। शीर्षन् यह प्रथमान्त पद है। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है। निपात्यते यह आक्षेप से प्राप्त होता है। सिद्धिप्रक्रिया का निर्देश ही निपात है। इस प्रकार शीर्षन् यह छन्द में निपातन करते हैं। किसको तो कहते है की शिरःशब्द को। उससे सूत्र का अर्थ होता है शिरस् शब्द को शीर्षन् आदेश छन्द में निपातन से होता है।

टिप्पणी

उदाहरण- इस शब्द का वेद में प्रयोग होता है जैसे शीर्ष्णः शीर्ष्णो जगतः इति।

20.11 वा छन्दसि॥ (6.1.106)

सूत्रार्थ- दीर्घ से उत्तर ज्जस और इच प्रत्याहार के स्थान पर पूर्वसवर्ण दीर्घ विकल्प से हो।

सूत्रावतरण- छन्द में दीर्घ से पूर्वसवर्ण का जस और इच प्रत्यय के स्थान पर दीर्घविधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की है।

सूत्रव्याख्या- यह दो पद वाला विधिसूत्र है। वा यह अव्ययपद है। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है। नादिचि इस सूत्र से इचि इस पद की अनुवृति है। दीर्घाज्जसि च इस सम्पूर्ण सूत्र की यहाँ अनुवृति है। प्रथमयोः पूर्वसवर्णः इस सूत्र से पूर्वसवर्णः इस पद की यहाँ अनुवृति है। उससे सूत्र का अर्थ होता है छन्द में दीर्घ से उत्तर जस और इच प्रत्यय को विकल्प से पूर्वसवर्णदीर्घ हो।

उदाहरण- वाराह्यौ यह उदाहरण। वाराहीशब्द से प्रथमा द्वितीया द्विवचन में औप्रत्यय करने पर वाराही औ इस स्थिति में दीर्घ ईकार से परे इच्प्रत्याहारस्थ औकार है अत प्रकृतसूत्र से पूर्वसवर्णदीर्घ वाराही यह रूप है। पूर्वसवर्ण अभाव में वाराही औ इस स्थिति में इको यणचि इससे ईकार के स्थान में यकार करने पर सर्ववर्णसम्मेलन करने पर वाराह्यौ यह रूप है। लोक मंमं तो पूर्वसवर्णनिषेध करने पर वाराह्यौ यह ही रूप है।

20.12 शेश्छन्दसि बहुलम्॥ (6.1.70)

सूत्रार्थ- छन्द में शि का बहुल करके लोप हो।

सूत्रावतरण- छन्द में शि का बाहुल्य से लोपविधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की है।

सूत्रव्याख्या- यह तीन पद वाला विधिसूत्र है। शेः छन्दसि बहुलम् ये सूत्रगत पदच्छेद है। शेः यह षष्ठ्यन्त पद है। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है। बहुलम यह अव्ययपद है। लोपो व्योर्वलि इस सूत्र से लोपः इस पद की अनुवृति है। भवति इस पद का अध्याहार किया गया है। उससे सूत्र का अर्थ होता है छन्द में शि का बहुल करके लोप हो। बहुलशब्द का अर्थ पूर्व में ही कह दिया है।

उदाहरण- यत्-शब्द का क्लीवलिङ्ग में जस्-प्रत्यय करने पर जस् इस स्थिति में जश्शसोः शिः इससे जस के स्थान में शि-प्रत्यय आदेश होने पर यत् शि इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से बाहुल करके शि का लोप होने पर त्यदादीनामः इससे तकार के स्थान में अकार करने पर य अ इस स्थिति में अतो गुणे इससे पररूप एकादेश करने पर य इस स्थिति

टिप्पणी

में नपुंसकस्य झलचः इससे नुमागम करने पर अनुबन्धलोप होने पर यन् इस स्थिति में सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ इससे उपधादीर्घ होने पर नकार के लोप होने पर या यह रूप सिद्ध होता है। लोक में तो यानि यह रूप है।

पाठगत प्रश्न-20.1

1. नान्त आदि संख्या के परे डट को आगम क्या होता है?
2. मत्वर्थ में विनि किससे होता है?
3. बहुप्रजाः इसका निपात विधान किस सूत्र से किया गया है?
4. छन्दसि च इस सूत्र से क्या होता है?
5. ऋतश्छन्दसि इस सूत्र से क्या होता है?
6. छन्द में खिद् धातु के एच को आत्-आदेश वैकल्पिक होता है अथवा नहीं।
7. शिरस्-शब्द को शीर्षन् निपातन किस सूत्र से होता है?

20.13 अङ्ग इत्यादौ च॥ (6.1.119)

सूत्रार्थ– अङ्ग शब्द में जो एङ् और उसके आदि में जो अकार उससे परे रहते पूर्व एङ् उसको प्रकृतिभाव होता है यजुर्वेद में।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से प्रकृतिवद्भाव का विधान किया है। इस सूत्र में तीन पद है। अङ्ग यह सप्तम्यन्त पद है (यहाँ लोपः शाकल्यस्य इस सूत्र से यकारलोप होने पर)। च यह अव्ययपद है। एङः पदान्तादति इस सूत्र से एङः और अति इन दो पदो की अनुवृति है। प्रकृत्यान्तः पादमव्यपरे इस सूत्र से प्रकृत्या इसकी अनुवृति है। यजुष्युरः इस सूत्र से यजुषि इसकी अनुवृति है। संहितायाम इसका अधिकार है। उससे सूत्र का अर्थ होता है यजुर्वेद विषय में अङ्गशब्द का जो एङ् उसे अति परे प्रकृति हो संहिता में।

उदाहरण- प्राणो अङ्गे अङ्गे अदीव्यत् इत्युदाहरणम्।

सूत्रार्थसमन्वय- प्राणो अङ्गे अङ्गे अदीव्यत् इस उदाहरण में प्राणो अङ्गे इत्यत्र अङ्गे इसमे एङः परे है इसलिए प्रकृतसूत्र से प्रकृतिवद्भाव होता है। अङ्गे अङ्गे यहाँ पर अङ्गे-पद से परे यदि अकार है तो अङ्गे यहाँ पर एङ को प्रकृतिवद्भाव होता है इस अर्थ से प्रकृतिवद्भाव होता है।

20.14 अवपथासि च॥ (6.1.121)

सूत्रार्थ- अनुदात्त अकारादि अवपथाःशब्द परे रहते यजु में एङ् को प्रकृति स्वर होता है।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र। इस सूत्र से प्रकृतिवद्भाव का विधान है। इस सूत्र में दो पद है। अवपथासि यह सप्तम्यन्तं पद है। च यह अव्ययपद है। एङः पदान्तादति इस सूत्र से एङः, अति इन दो पद की यहाँ अनुवृति है। प्रकृत्यान्तः पादमव्यपरे इस सूत्र से प्रकृत्या इसकी अनुवृति है। यजुष्युरः इस सूत्र से यजुषि इसकी अनुवृति है। अनुदात्ते च कुधपरे इस सूत्र से अनुदात्ते इस पद की अनुवृति है। उससे सूत्र का अर्थ होता है अनुदात्त और अति अवपथास्-शब्द से परे एङ् को प्रकृति होता है यजुर्वेद में।

उदाहरण- त्रीरुद्रेभ्यो अवपथाः।

सूत्रार्थसमन्वय- पूर्वोक्त उदाहरण में त्रीरुद्रेभ्यो यहाँ पर यकार से उत्तरवर्ति ओकार को प्रकृतिवद्भाव है। क्योकि अवपथाः (वध्धातु से लङ मध्यमपुरुष एकवचनान्त रूप है) यहाँ वकार से पूर्ववर्ति अकार अनुदात्त हो। और ह्रस्व अकार भी है।

20.15 स्यश्छन्दसि बहुलम्॥ (6.1.133)

सूत्रार्थ- स्य इसके सु का लोप हो हल परे रहते।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से सुलोप का विधान है। इस सूत्र में तीन पद है। स्यः छन्दसि बहुलम् ये सूत्रगतपदच्छेद है। स्यः यह लुप्तषष्ठ्यन्त पद है। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है। बहुलम यह प्रथमान्त पद है। एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि इस सूत्र से हलि और सुलोपः इन दो पद की अनुवृति है। उससे सूत्र का अर्थ होता है स्य-इसका सुलोप हो हल परे रहते है।

उदाहरण- एष स्य भानुः इत्युदाहरणम्।

सूत्रार्थसमन्वय- स्य भानुः यहाँ पर त्यद्-शब्द से सुविभक्ति में त्यदादीनामः इससे दकार के स्थान में अकारादेश होने पर त्य अ स् इस स्थिति में पररूप एकादेश होने पर त्य स् इस स्थिति में तदोः सः सावनन्त्ययोः इस सूत्र से तकार के स्थान में सकार होने पर स्य स् इस स्थिति में हल भकार परे प्रकृतसूत्र से सु के सकार का लोप होने पर स्य भानुः यह रूप है। इसी प्रकार आगे भी जानना चाहिए।

20.16 ह्रस्वाच्चन्द्रोत्तरपदे मन्त्रे॥ (6.1.151)

सूत्रार्थ– ह्रस्व से उत्तर चन्द्रशब्द उत्तरपद को सुडागम हो मन्त्र विषय में।

टिप्पणी

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से सुडागम का विधान है। इस सूत्र में तीन पद है। ह्रस्वात् चन्द्रोत्तरपदे मन्त्रे ये सूत्रगतपदच्छेद है। ह्रस्वात् यह पञ्चम्यन्त पद है। चन्द्रोत्तरपदे यह सप्तम्यन्त पद है। चन्द्र उत्तरपदं यस्य तत् चन्द्रोत्तरपदम् तस्मिन् चन्द्रोत्तरपदे यहाँ बहुव्रीहिसमास है। मन्त्रे यह सप्तम्यन्त पद है। सुट्-कात् पूर्वः इस सूत्र से सुट् इस पद की अनुवृति है। उससे सूत्र का अर्थ होता है ह्रस्व से उत्तर चन्द्रशब्द उत्तरपद हो तो उसे सुडागम हो मन्त्र विषय में।

उदाहरण- हरिश्चन्द्रः इत्युदाहरणम्।

सूत्रार्थसमन्वय- हरिश्चन्द्रो यस्मिन् इस विग्रह में प्रक्रिया के द्वारा हरि चन्द्र इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से ह्रस्व से परे चन्द्र उत्तरपद को सुडागम होने पर सुट के टित्त्व होने से आद्यन्तौ टकितौ इस परिभाषा से परिष्कार करने पर हरि सुट् चन्द्र इस स्थिति में स्तोः श्चुना श्चुः इससे सकार को शकार करने पर संयोग से निष्पन्न होने से हरिश्चन्द्र प्रातिपदिक से सु विभक्ति कार्य करने पर हरिश्चन्द्रः यह रूप बना है।

20.17 पितरामातरा च छन्दसि॥ (6.3.33)

सूत्रार्थ– द्वन्द्व समास में निपात करते है।

सूत्रव्याख्या– इस विधिसूत्र में तीन पद है। पितरामातरा यह प्रथमान्त पद है। च यह अव्ययपद है। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है। देवताद्वन्द्वे च इस सूत्र से द्वन्द्वे इस पद की अनुवृति है। निपातन इस पद का आक्षेप किया गया है। उससे सूत्र का अर्थ होता है छन्द में द्वन्द्व पितरामातरा इस शब्द का निपातन किया जाता है।

उदाहरण- आ मा गन्तां पितरामातरा च इति।

सूत्रार्थसमन्वय- पिता च माता च इस विग्रह में प्रक्रिया से पितृ मातृ इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से **पितरामातराशब्द** का निपातन करते है। लोक में **पितरौ, मातापितरौ** ये दो रूप है।

20.18 सध मादस्थयोश्छन्दसि॥ (6.3.96)

सूत्रार्थ– सह को सध-आदेश हो।

सूत्रव्याख्या– इस विधिसूत्र में तीन पद है। सध यह अविभक्तिक पद है। मादस्थयोः यह सप्तम्यन्त पद है। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है। सहस्य सध्रि इस सूत्र से सहस्य इस पद की अनुवृत्ति है। उससे सूत्र का अर्थ होता है सह को सधा आदेश हो माद और स्थ शब्द के परे छन्द में।

टिप्पणी

उदाहरण– सधस्थम् इत्युदाहरणम्।

सूत्रार्थसमन्वय– सह तिष्ठति इस विग्रह में सह स्था इस स्थिति में आतोऽनुपसर्गे कः इस सूत्र से कप्रत्यय करने पर सह स्था क इस स्थिति में अनुबन्धलोप होने पर सह स्था अ इस स्थिति में कप्रत्यय के कित्त्व होने से आतो लोप इटि च इस सूत्र से स्था इसके आकार का लोप होने पर सह स्थ् अ इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से सह को सधादेश होने पर सध स्थ् अ इस स्थिति में संयोग से निष्पन्न होने पर सधस्थ-प्रातिपदिक से सु विभक्तिकार्य करने पर **सधस्थः** यह रूप है। अम्-विभक्ति में **सधस्थम्** यह रूप सिद्ध होता है।

20.19 छन्दसि च॥ (6.3.126)

सूत्रार्थ- अष्टन को आत्व हो उत्तर पद परे रहते।

सूत्रव्याख्या– इस विधिसूत्र में दो पद है। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है। च यह अव्ययपद है। अष्टनः संज्ञायाम् इस सूत्र से अष्टनः इस पद की अनुवृति है। ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः इस सूत्र से दीर्घः इस पद की अनुवृति है। और अचश्च इस परिभाषा से अचः यह षष्ठ्यन्त पद प्राप्त होता है। उससे सूत्र का अर्थ होता है छन्द में अष्टन के अच को दीर्घ हो (आत्त्व ही हो उत्तरपद परे रहते)। अच आदि को अथवा अन्त्य को किस स्थान में दीर्घ होता है यदि ऐसा कोई प्रश्न करे तो कहते है की अलोऽन्त्यस्य इस परिभाषा से अन्त्य अल के स्थान में ही यह अर्थ प्राप्त होता है अष्टन के अन्त्य अच के स्थान में ही दीर्घ होता है उत्तरपद परे रहते वेदविषय में यह सम्पूर्ण अर्थ प्राप्त होते है।

उदाहरण- अष्टापदी इत्युदारहणम्।

सूत्रार्थसमन्वय- अष्टौ पादाः यस्याः ऐसा विग्रह करने पर प्रक्रिया कार्य करने पर अष्टन् पाद इस स्थिति में नलोपः प्रातिपदिकस्य इस सूत्र से नकार के लोप होने पर अष्ट पाद इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से पाद इस उत्तरपद के परे रहते अष्टन के टकार उत्तरवर्ति अकार को दीर्घ आत्त्व करने पर अष्टापाद इस स्थिति में अलोऽन्त्यस्य इस परिभाषा से परिष्कृत करने पर संख्या सु पूर्व के इससे दकार उत्तर आकारलोप होने पर स्त्रीत्व विवक्षा में पादोऽन्यतरस्याम् इससे विकल्प से ङीप्-प्रत्यय करने पर अष्टापादी इस स्थिति में सु विभक्तिकार्य करने पर अष्टापादी यह रूप बनता है।

20.20 मन्त्रे सोमाश्वेन्द्रियविश्वदेव्यस्य मतौ॥ (6.3.131)

सूत्रार्थ– मन्त्र विषय में सोम-अश्व-इन्द्रिय-विश्वदेव्य ये सभी दीर्घ हो मतुप्-प्रत्यय के परे रहते।

टिप्पणी

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से दीर्घ का विधान करते है। इस सूत्र में तीन पद है। मन्त्रे यह सप्तम्यन्त पद है। सोमाश्वेन्द्रियविश्वदेव्यस्य यह षष्ठ्यन्त पद है। मतौ यह सप्तम्यन्त पद है। मतौ इसका मतुप्-प्रत्यय करने पर यह अर्थ है। ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः इस सूत्र से दीर्घ इस पद की अनुवृति है। उससे सूत्र का अर्थ होता है मन्त्र विषय में सोम-अश्व-इन्द्रिय-विश्वदेव्य इत्यादि को मतुप्-प्रत्यय के परे दीर्घ हो। किसको दीर्घ हो तो कहते है- अचश्च इस परिभाषा से अचः इस षष्ठ्यन्त पद की प्राप्ति है। अच के आदि को अथवा अन्त्य को किस स्थान को दीर्घ हो तो कहते है अलोऽन्त्यस्य इस परिभाषा से अन्त्य के अल स्थान को ही यह अर्थ प्राप्त होता है मन्त्र विषय में सोम-अश्व-इन्द्रिय-विश्वदेव्य इनके अन्त्य अच को दीर्घ हो मतुप्-प्रत्यय करने पर यह सम्पूर्ण अर्थ प्राप्त होता है।

उदाहरण- सोमावती इत्युदाहरणम्।

सूत्रार्थसमन्वय- सोमः अस्याम् अस्ति ऐसा विग्रह करने पर सोमशब्द से तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् इस सूत्र से मतुप्-प्रत्यय करने पर सोम मत् इस स्थिति में मादुपधायाश्च मतोर्वोऽयवादिभ्यः इससे मकार को वकार करने पर सोम वत् इस स्थिति में मतुप के उगित्त होने से उगितश्च इससे ङीप्-प्रत्यय करने पर अनुबन्धलोप होने पर सोमवत् ई इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से मकार से उत्तर आकार को दीर्घ आकार करने पर संयोग से निष्पन्न होने पर सोमावतीशब्द से सु विभक्ति के कार्य करने पर सोमावती यह रूप बनता है।

20.21 ओषधेश्च विभक्तावप्रथमायाम्॥ (6.3.132)

सूत्रार्थ– मन्त्र विषय में ओषधिशब्द को दीर्घ हो।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से दीर्घ विधान करते है। इस सूत्र में चार पद है। ओषधेः च विभक्तौ अप्रथमायाम् ये सूत्रगतपदच्छेद है। न प्रथमा अप्रथमा। अर्थात् प्रथमा-भिन्न यह अर्थ है। और वह विभक्तौ इसका विशेषण है। उस प्रथमा-से भिन्न द्वितीया आदि विभक्ति यह अर्थ प्राप्त होता है। ओषधोः यह षष्ठ्यन्त पद है। च यह अव्ययपद है। विभक्तौ यह सप्तम्यन्त पद है। अप्रथमायाम् यह सप्तम्यन्त पद है। और वह विभक्ति का विशेषण है। मन्त्रे सोमाश्वेन्द्रियविश्वदेव्यस्य मतौ इस सूत्र से मन्त्रे इस पद की अनुवृति है। ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः इस सूत्र से दीर्घः इस पद की अनुवृति है। अचश्च अलोऽन्त्यस्य इन परिभाषाओ के द्वारा अन्त्य अच को दीर्घ हो यह अर्थ प्राप्त होता है। और सूत्र का अर्थ है– मन्त्र में ओषधिशब्द के अन्त्य अच को दीर्घ हो।

उदाहरण- ओषधीभ्यः इत्युदाहरणम्।

सूत्रार्थसमन्वय– ओषधिशब्द से भ्यस्-प्रत्यय करने पर ओषधि भ्यस् इस स्थिति में प्रकृतसूत्र

टिप्पणी

से ओषधिशब्द के अन्त्य अच इकार को दीर्घ करने पर ओषधी भ्यस् इस स्थिति में सकार के रुत्व होने पर विसर्ग करने पर ओषधीभ्यः यह रूप सिद्ध होता है।

20.22 इकः सुञि॥ (6.3.134)

सूत्रार्थ– ऋचा विषय में दीर्घ हो।

सूत्रावतरण– ऋचा विषय में इगन्त शब्द को सुञ परे रहते दीर्घविधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की गई है।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से दीर्घ का विधान है। दो पदवाले इस सूत्र में इकः यह षष्ठ्यन्त पद है। सुञि यह सप्तम्यन्त निपातसंज्ञक पद है। ऋचि तु-नु-घ-मक्षु-तङ्-कुत्रो-रुष्याणाम् इस सूत्र से ऋचि इस विषयसप्तम्यन्त पद की अनुवृति है। ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः इस सूत्र से यहाँ दीर्घः इस पद की अनुवृति है। इस प्रकार यहाँ पदयोजना ऋचि सुञि इकः दीर्घः है। उससे सूत्र का अर्थ होता है– ऋग्विषय में इगन्त को दीर्घ हो सुञ के परे रहते। अत इस सूत्र से ऋग्वेद में सुञ परे इक को दीर्घ होता है।

उदाहरण- अभीषुणः।

सूत्रार्थसमन्वय– ऋग्वेद में अभीषुणः पद है। इस प्रकार यहाँ ऋचा विषय में अभि इसके इक इकार से परे सुञ् इसका निपातन है। उससे इस सूत्र से उस इक इकार के स्थान में दीर्घ ईकार करने पर सूञः इस सूत्र से सकार के स्थान में षकार करने पर नश्च धतुस्थोरुषुभ्यः और इस सूत्र से नकार को णकार करने पर अभीषुणः यह रूप सिद्ध होता है।

20.23 द्व्यचोऽतस्तिङः॥ (6.3.135)

सूत्रार्थ– मन्त्र विषय में दीर्घ।

सूत्रावतरण- ऋचा मन्त्र में द्व्यच तिङन्त के अत को दीर्घविधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की है।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से दीर्घ विधान करने के लिए। इस सूत्र में द्व्यचः अतः तिङः ये पदच्छेद है। तीन पद वाले इस सूत्र में द्व्यचः, अतः, तिङः ये तीन पद षष्ठी एकवचनान्त है। इस सूत्र में ऋचि तु-नु-घ-मक्षु-तङ्-कुत्रो-रुष्याणाम् इस सूत्र से ऋचि इस विषयसप्तम्यन्त पद की अनुवृति है। ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः इस सूत्र से यहाँ दीर्घः इस पद की अनुवृति है। और मन्त्रे सोमाश्वेन्द्रिय-विश्व-देव्यस्य मतौ इस सूत्र से मन्त्रे इस सप्तम्यन्त पद की अनुवृति है। और इस प्रकार यहाँ पदयोजना है- ऋचि मन्त्रे द्व्यचः तिङः अतः दीर्घः इति। उससे सूत्र का अर्थ होता है– ऋग्विषय में मन्त्र में द्व्यच तिङन्त के अत के स्थान में दीर्घ हो।

टिप्पणी

उदाहरण- विद्मा।

सूत्रार्थसमन्वय- विद ज्ञाने यह अदादिगण में पढ़े होने से विद्-धातु से कर्ता में लट मस शप और शप का लुक करने पर विद् मस् इस स्थिति में विदो लटो वा इस सूत्र से मस के स्थान में म-आदेश होने पर विद्म यह रूप होता है। यहाँ विद्म इस तिङन्त पद में द्व्यच् है। इसलिए ऋग्विषय मन्त्र में विद्म इस तिङन्त पद के अन्त्य अकार के स्थान में प्रकृतसूत्र से दीर्घ आकार करने पर विद्मा यह रूप सिद्ध होते है।

पाठगत प्रश्न-20.2

8. प्राणो अङ्गे इत्यादि में सन्धि कैसे नही होती है।
9. अङ्ग इत्यादौ च इस सूत्र में अङ्ग यहाँ पर कौनसी विभक्ति है।
10. स्यः यह किस प्रकार का पद है।
11. एष स्य भानुः इस वाक्य में स्य-इस उत्तरपद के सुलोप किससे होता है।
12. पितरामातरा यह शब्द ठीक है अथवा नही।
13. सध यह किस प्रकार का पद है।
14. ओषधीभ्यः यहाँ पर ईकार कहा से।
15. किस वेद में सुञ के परे इक को दीर्घ होता है।
16. विद्मा यहाँ पर अकार को दीर्घ किस सूत्र से होता है।

पाठसार

इस पाठ में जिन विषयो की जो आलोचना की है, अधुना संक्षेप से कहते है। जैसे नान्त आदि संख्यादि के परे डट को थट् और मट् आगम होता है। मत्वर्थ में विनिप्रत्यय बहुल करके छन्द में इस सूत्र से। छन्द में बहुव्रीह समास में बहुप्रजाः इस शब्द का निपातन करते है। बहुव्रीहि समास में दन्त को दतृ-आदेश होता है छन्दसि च इस सूत्र से। छन्द विषय में ऋदन्त प्रातिपदिक से बहुव्रीहि में कप्-प्रत्यय नहीं होता है। तुजादीनाम् दीर्घोऽभ्यासस्य इस सूत्र से तुजादियो के अभ्यास को दीर्घ होता है। छन्द में खिद् को विकल्प से एच को आकार होता है खिदेश्छन्दसि इस सूत्र से। शीर्षश्छन्दसि इस सूत्र से शिरस् शब्द को शीर्षन् यह निपातन होता है। पुनः दीर्घाज्जसि और इचि च पूर्वसवर्णदीर्घ विकल्प से होता है। सह को सध आदेश सध मादस्थयोश्छन्दसि इस सूत्र से होता है।

ऋचा विषय में इक को सुञ परे दीर्घ होता है इकः सुञि इस सूत्र से। छन्द में बाहुल्य से शि का लोप होता है। ऋचा विषय में इक को सुञ के परे दीर्घ होता है इकः सुञि इस सूत्र से। इन विषयो की इस पाठ में अत्यन्त सरल तरीके से आलोचना कि है।

पाठान्त प्रश्न

1. वा छन्दसि इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
2. ऋचश्छन्दसि इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
3. हरिश्चन्द्रः इस रूप को सिद्ध कीजिए।
4. अङ्ग इत्यादौ च इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
5. विद्मा इस रूप को सिद्ध कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

20.1

1. स्थट् और मट्।
2. बहुलं छन्दसि इससे।
3. बहुप्रजाश्छन्दसि च इस सूत्र से।
4. दन्तशब्द को दतृ आदेश विधान करने के लिए।
5. ऋदन्त बहुव्रीहि में कप् का निषेध करते है।
6. विकल्प से।
7. शीर्षश्छन्दसि इस सूत्र से।

20.2

8. अङ्ग इत्यादौ च इस सूत्रकृत नियम से।
9. अङ्ग इत्यादौ च इस सूत्र में अङ्ग यहाँ पर सप्तमीविभक्ति है।
10. स्यः यह लुप्तषष्ठ्यन्त पद है।
11. स्यश्छन्दसि बहुलम् इस सूत्र से।

टिप्पणी

12. यह साधु रूप है।

13. अविभक्तिक पद को।

14. ओषधेश्च विभक्तावप्रथमायाम् इस सूत्र से होता है।

15. ऋग्वेद में।

16. द्व्यचोऽतस्तिङः इस सूत्र से।

बीसवां पाठ समाप्त